GOVERNMENT (AUTONOMOUS) GIRLS POST GRADUATE
COLLEGE OF EXCELLENCE, SAGAR (M.P.)
(NAAC 'A' Grade Accredited)
07582 404480 heggpgcsag@mp.gov.in www.ggpgcs.com

CRITERION - II

STUDENT ENROLLMENT AND PROFILE

3.1

Promotion of Research and Facilities

Research Development Activity

S. N.	Component/Activities	Details of Event
1.	Name of the Department Unit Agency	Research Methodology
2.	Name of the Activity	One Week, Workshop Research Methodology (Online)
3.	Name of the Scheme	Workshop
4.	Date and Year of the Activity	01.02.2021 to 07.02.2021
5.	Number of Students Participated in the Activity	1450
6.	Report of the Activity (in 100 words)	In Corona period all the physical activity were paused the HEI organized one week workshop on Research Methodology workshop was organised by IQAC from 01.02.2021 to 07.02.2021 the workshop was designed to Cover all aspects of Research Methodology. Eminent speakers of the workshop were from different Universities.
7.	Poster of Activity	Enclosed

1] Research Development Activity

GOVERNMENT (AUTONOMOUS) GIRLS POST GRADUATE COLLEGE OF EXCELLENCE, SAGAR (M.P.)

(NAAC 'A' Grade Accredited)

07582 404480 heggpgcsag@mp.gov.in www.ggpgcs.com

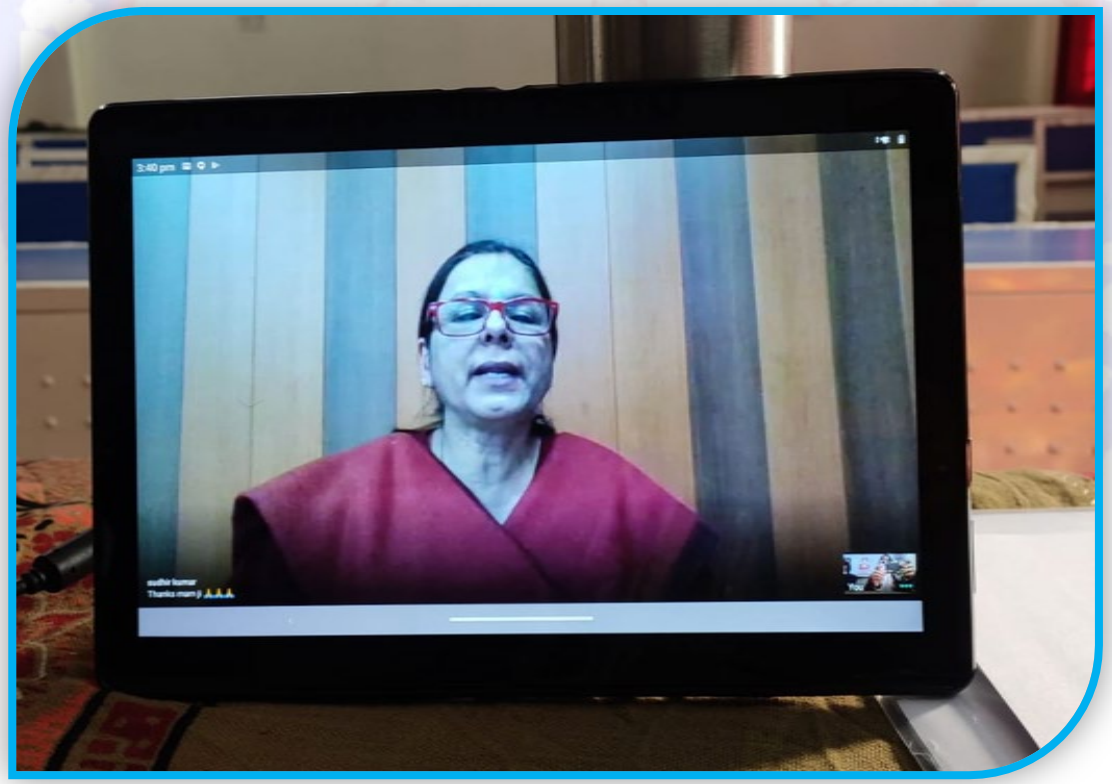

Govt. Auto. Girls P.G. College of Excellence, Sagar (M.P.)

Reaccredited "A" By NAAC with CGPA 3.02/4.00

One Week National Workshop

on

Research Methodology

Certificate

This is to certify that

Participated in One day National Webinar on

Research Methodology

Organised by

Govt. Auto. Girls P.G. College of Excellence, Sagar (M.P.)

Held on 01-02-2021 to 07.02.2021

Dr. Bhawana Yadav
Organizing Secretary

Prof. Naveen Gideon
Convener

Dr. B. D. Ahirwar
Patron/Principal

सागर

समापन • शोध प्रविधि पर राष्ट्रीय कार्यशाला, 1478 प्रतिभागी शामिल

शोध विविध विषयों में गहन और सूक्ष्म ज्ञान देता है, विकास में भी सहायक : प्रो. यादव

भास्कर संवाददाता | सागर

गर्ल्स कॉलेज में आईक्यूएसी के तत्वावधान में शोध प्रविधि पर चल रही राष्ट्रीय कार्यशाला का समापन हुआ। मुख्य अतिथि पूर्णिया विवि बिहार के कुलपति प्रो. आरएन यादव ने वर्तमान में शोध की आवश्यकता और महत्व को विस्तार से बताया। उन्होंने कहा शोध विविध विषयों में गहन और सूक्ष्म ज्ञान प्रदान करता है। शोध सामाजिक विकास में भी सहायक होता है। प्रमुख अतिथि सागर विवि की कुलपति प्रो. जनकदुलारी आही ने सामाजिक और प्राकृतिक शोध में डेटा संग्रहण और उसके विश्लेषण को बताया। उन्होंने कहा हम आज जहां हैं, वह विभिन्न क्षेत्रों में हुए शोध का परिणाम है। आने वाला समय शोध आधारित होगा। शोध ही आपके विकास को सुनिश्चित करेंगे। महाविद्यालय और विश्वविद्यालय की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका होगी। जिसके लिए उन्हें अपने आप को तैयार करना होगा।

प्राचार्य डॉ. बीडी अहिरवार ने कहा समाज में जब कोई सामाजिक घटनायें घटती हैं उन घटनाओं के वास्तविक कारणों को खोजना कोई सरल कार्य नहीं हैं। क्योंकि सामाजिक जीवन इतना जटिल हो गया है कि उनके पीछे अनेक कारण हो सकते हैं। कार्यशाला समन्वयक डॉ. नवीन गिडियन ने कहा हमें गर्व है अपने वैज्ञानिकों पर, जिन्होंने शोध के द्वारा कोरोना की वैक्सीन बनाई और देश की जनता को भयानक वायरस से मुक्ति दिलाई। साथ ही विश्व में भारत के नाम गौरव दिलाया। ये सब केवल और केवल शोध के द्वारा ही संभव हुआ। शोध, मानव ज्ञान को दिशा प्रदान करता है। शोध से व्यक्तित्व का बौद्धिक विकास होता है अंत में राष्ट्र का विकास होता है। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों से 1478 प्रतिभागियों ने इसमें पंजीयन कराया। फीडबैक डॉ. नितेश ओबेराय बंडा कॉलेज और डॉ. सरोज यादव सैफई उत्तरप्रदे ने दिया।

शोध का संबंध आस्था से कम, परीक्षण से अधिक होता है : डॉ. भावना

कार्यशाला सचिव डॉ. भावना यादव ने कहा कार्यशाला का उद्देश्य जहां फैकल्टी को शोध के क्षेत्र में नई जानकारियों से अवगत कराना था, वहीं शोधार्थियों को शोध के व्यवहारिक और सैद्धांतिक पक्षों से अवगत कराया गया। शोध का संबंध आस्था से कम, परीक्षण से अधिक होता है। शोध मानव ज्ञान को दिशा प्रदान करता है और ज्ञान के भंडार को विकसित करता है। किसी भी विषय में हो रहे शोध उस विषय को स्थापित और समृद्ध करते हैं।

GOVERNMENT (AUTONOMOUS) GIRLS POST GRADUATE
COLLEGE OF EXCELLENCE, SAGAR (M.P.)
(NAAC 'A' Grade Accredited)
07582 404480 heggpgcsag@mp.gov.in www.ggpgcs.com

साप्ताहिक कार्यशाला का हुआ आयोजन

आदित्य ज्योति/- सागर

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय में आईक्यूएसी के तत्वाधान में चल रही शोध प्रविधि पर साप्ताहिक कार्यशाला के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि महाराजा छत्रसाल विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. थापक ने अपने उद्बोधन में शोध की सामान्य पद्धतियों की जानकारी देते हुए प्रत्यक्ष प्रमाण के उदाहरण देते हुये अपनी बात को समझाया। अध्यक्षीय उद्बोधन करते हुए प्राचार्य डॉ.बीडी अहिरवार ने शोध प्रविधि क्या है, किस प्रकार शोध से संबंधित जानकारियों एकत्रित करें।इसके बारे में जानकारी दी। कार्यशाला सचिव डॉ.भावना यादव ने कहा कि विकास का कार्य परिवर्तन और परिवर्तन का अर्थ हर क्षेत्र में नवीन खोज।इन सारी नवीन खोजों के प्राक्कल्पना और शोध प्ररचना की भूमिका होती है। शोधार्थी की हाइपोथीसिस जितनी व्यावहारिक, सरल, स्पष्ट सत्य पर आधारित होगी शोध के परिणाम उतने उपयोगी होंगे। वास्तव में हाइपोथीसिस शोधकर्ता के अध्ययन का केन्द्र होती है। शोधकर्ता शोध के द्वारा इसी हाइपोथीसिस का परीक्षण कर निष्कर्ष निकलता है ।इस हेतु उसे आवश्यकता होती है एक अच्छी रिसर्च डिजाइन की। अच्छी रिसर्च डिजाइन कम समय, कम धन और कम प्रयासों में अधिकतम शोध के उद्देश्यों को प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करती है। कोरोना महामारी में यदि वैक्सीन इतने कम समय में आया तो इसका कारण वैक्सीन के निर्माण में एक सशक्त शोध प्ररचना की महत्वपूर्ण भूमिका है। शोध प्ररचना पर डॉ. राजीव चौधरी विभागाध्यक्ष लॉ पंडित रविशंकर शुक्ला विवि रायपुर छत्तीसगढ़ ने बताया कि शोध प्ररचना के बिना शोध का मार्ग नहीं है प्ररचना ही शोध की दिशा तय करती है।

कार्यशाला को डॉ.अरविंद कुमार शर्मा एमएलबी आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कालेज ग्वालियर, डॉ.अनुपमा कौशिक विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान डॉ.हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, डॉ.अंजना नेमा ने भी अपने विचार रखे। डॉ.अंजली दुबे, सुश्री सुप्रिया यादव, सुश्री मनीषी शाक्य ने प्रतिवेदन लेखन में सहयोग प्रदान किया। डॉ.नवीन गिडियन, डॉ.अंजना नेमा, डॉ.पद्मा आचार्य, डॉ.संजय खरे, डॉ.शैलेष आचार्य ने कार्यशाला के सुचारू रूप से संचालन में सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

राष्ट्रीय कार्यशाला का समापन

शोधार्थी जाति धर्म के बंधनों से परे शोध करें : डॉ. अहिरवार

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. शोधार्थी जाति धर्म के बंधनों से परे शोध करें। शोधार्थी को उन प्रेरणाओं एवं मानसिक अभिवृत्तियों को खोजना पड़ता हैं। यह बात शोध प्रविधि पर राष्ट्रीय कार्यशाला के समापन सत्र के अवसर पर अध्यक्ष के कालेज के प्राचार्य डॉ. बीडी अहिरवार ने कही।

उन्होंने कहा कि सामाजिक संरचना उसके रीति रिवाज एवं परम्पराओं यहां तक की धार्मिक विश्वासों की गहराई में जाना होता है, जो कि इन घटनाओं के अंजाम देने में प्रेरक अथवा सहायक की भूमिका निभाते हैं। यद्यपि शोध समस्या का निर्धारण भी अपने में एक समस्या होती है। कार्यशाला के समापन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. आरएन यादव कुलपति पूर्णिया विवि बिहार, डॉ. जनक आही कुलपति डॉ. हरि सिंह गौर केन्द्रीय विवि थी।

कार्यशाला सचिव डॉ. भावना यादव ने कहा कि कार्यशाला का उद्देश्य जहां फेकेल्टी को शोध के क्षेत्र में नई जानकारियों से अवगत कराना था। वहीं कार्यशाला में जुड़े शोधार्थी के शोध के व्याहारिक और सैद्धान्तिक पक्षों से अवगत कराया। साथ ही शोध का संबंध आस्था से कम परीक्षण से अधिक होता है। प्रमुख अतिथि कुलपति डॉ. आही ने कहा कि सामाजिक और प्राकृतिक शोध में डेटा संग्रहण और उसके विश्लेषण को बताते हुए कहा कि हम आज जहां हैं वहां विभिन्न क्षेत्रों में हुए शोध का परिणाम आने वाला समय शोध आधारित होगा। शोध ही आपके विकास को सुनिश्चित करेंगे।

शोध की जड़ें इतिहास में होती हैं: डॉ. गिडियन

सागर | गर्ल्स कॉलेज में शोध प्रविधि पर चल रही साप्ताहिक कार्यशाला में विभिन्न विशेषज्ञों ने डाटा विश्लेषण तथा गुणात्मक शोध पर विचार रखे। आयोजन प्रभारी डॉ. भावना यादव ने कहा शोध सामाजिक परिवर्तन का माध्यम होते हैं, जिनमें डाटा का संग्रहण जितना महत्त्वपूर्ण होता है उतना ही महत्वपूर्ण उनका विश्लेषण होता है। हमारे आस-पास हो रहे प्रायः सभी परिवर्तन गुणात्मक शोध और डाटा विश्लेषण से ही संभव हो पाए हैं। कार्यशाला समन्वयक डॉ. नवीन गिडियन ने कहा हर शोध की जड़ें इतिहास में होती हैं। विषय कोई भी हो उसका ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य उसके वर्तमान को प्रभावित करता है। अतः शोधार्थी को ऐतिहासिक डाटा का विश्लेषण निष्पक्ष रूप से करना चाहिए।